बौद्ध स्तूप–वास्तु
(उद्भव एवं आरम्भिक संरचना)

–डॉ. ज्ञानेन्द्र नारायण राय
सेण्टेनरी फेलो– भारत अध्ययन केन्द्र
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

'स्तूप' शब्द का प्रयोग भारतीय साहित्यिक परम्परा में वैदिक काल से ही प्राप्त होता है। इस शब्द का आरम्भिक सन्दर्भ सर्वप्राचीन ग्रन्थ *ऋग्वेद* से ही प्राप्त है। *ऋग्वेद* की तीन ऋचाओं में 'स्तूप' शब्द का उल्लेख हुआ है –––

'दिव्यं सानु स्तूपैरू[1] अर्थात् 'दिव्य स्तूप', '***वनस्योर्ध्वं स्तूप***'[2] उर्ध्व स्तूप अर्थात् 'ऊँचा स्तूप', '***अरुषस्तूपो***'[3] अरुष का अर्थ 'कोष' अथवा 'सूर्य' ह[4] एवं '***हिरण्यस्तूप***'[5] में 'स्तूप' शब्द का अर्थ 'ढूहा' वा 'ढेर' है दृ स्वर्ण का ढेर, जैसे कि कृषक अपने धान्य का ढेर लगाता है (***स्तूपयति धान्यं कृषकः***), इसी प्रकार *अमरकोश*[6] में मिट्टी के ढेर के लिए (***मृदादि कूटः*** एवं ***राशीकृत मृत्तिकादि***) भी इस शब्द का प्रयोग हुआ है।[7] बौद्ध स्तूपों की रचना *शतपथ ब्राह्मण*[8] के वर्तुल श्मशान के सन्दर्भ में भी देखने का दृष्टिकोण संकेतित हुआ है।[9] बौद्ध काल में बुद्ध के शरीरावशेष को संरक्षित करते हुए स्तूप रचे गए।

इस रचना में पवित्र शरीरावशेष को कलश व मंजूषा में रख कर उसे मिट्टी व ईंटों एवं पत्थरों के ढेर में रखा गया। इन स्तूपों का मूल स्वरूप कैसा था वह चाक्षुष रूप से प्राप्त नहीं है। मूल स्वरूप को परवर्ती काल में ज्यों का त्यों रखते हुए बृहदाकार स्तूपों की नयी रचनाएँ हुईं ऐसा पुरातात्त्विक अवशेषों से स्पष्ट है।

कुशीनगर में भगवान् बुद्ध के परिनिर्वाण के बाद कुशीनगर के मल्लों के राजा ने अपने मुकुट–बन्धन नामक स्थान पर दाह–संस्कार[10] के उपरान्त बुद्ध के शरीरावशेष की पूजा–अर्चा अपने सभा–भवन में सात दिनों तक की।[11]

मल्लों के मुकुट–बन्धन नामक स्थान (वर्तमान नाम रामाभार) पर निर्मित स्तूप

बुद्ध के महापरिनिर्वाण की सूचना पा कर मगध के राजा अजातशत्रु राजगृह से, लिच्छवियों के राजा वैशाली से, शाक्यों के राजा कपिलवस्तु से, बुलियों के राजा अलकप्प से, कोलियों के राजा रामग्राम से, वेठदीप से वेठदीप का ब्राह्मण और पावा के मल्लों के राजा, जो बुद्ध के प्रति श्रद्धा–भाव रखने वाले तथा उनके वंश के थे, उन आठ राजाओं ने बुद्ध के पवित्र शरीरावशेष पर अपने–अपने अधिकार के सन्देश कुशीनगर भेजे।[12] कुशीनगर के मल्लों के शासक द्वारा इनकार के साथ स्थिति यहाँ तक पहुँची कि वे आपस में युद्ध के लिए सन्नद्ध हो गए।[13]

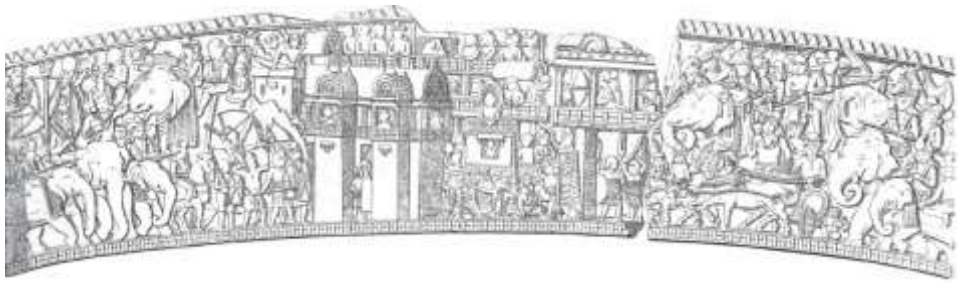

साँची के दक्षिणी तोरण पर अंकित बुद्धा के शरीरावशेष हेतु युद्ध के लिए सन्नद्ध राजा गण

सन्निकट युद्ध की स्थिति को देखते हुए शरीरावाशेष को मृत्पात्र में एकत्र किये हुए द्रोण नामक ब्राह्मण ने बीच–बचाव करते हुए सभी राजाओं को यह कहते हुए कि, 'जिस महापुरुष ने हमें अहिंसा का पाठ पढ़ाया उन्हीं के शरीर–भस्म के लिए युद्ध उचित नहीं है'[14] राजाओं की सद्बुद्धि को प्रस्फुरित कर युद्ध–वृत्ति को शान्त कर दिया और सभी राजाओं को बराबर–बराबर भस्मावशेष आवण्टित कर दिए एवं मृत्पात्र अपने लिए रखा।[15] आवण्टन के उपरान्त फिप्पलिवन के मोरियों के राजा कुशीनगर पहुँचे और उन्हें श्मशान–भूमि की राख से संतोष करना पड़ा।[16] इन दस व्यक्तियों ने अपने–अपने स्थानों पर स्मारक स्तूप बनवाये।[17]

आठ स्तूप शरीरावशेष पर, एक स्तूप शरीरावशेष के मृत्पात्र पर एवं एक स्तूप श्मशान भूमि की राख पर बने।[18] इस प्रकार कुल दस स्तूपों की रचना हुई जो प्रथमतः संरचित बौद्ध–स्तूप थे।

यह ध्यान देने की बात है कि बुद्ध के परिनिर्वाण के बाद के रचित इन स्तूपों के पूर्व भी स्तूप संरचित किये जाते थे। महापरिनिर्वाण–सूत्र में बुद्ध के माध्यम से ही यह उल्लिखित हुआ है कि 'उनके शरीरावशेष पर उसी प्रकार से स्तूप की रचना की जाय जिस प्रकार से किसी चक्रवर्ती राजा के लिए स्तूप की रचना की जाती है (***चातुम्महापथे रञ्ञो चक्कवत्तिस्स थूपं करोन्ति ... एवं ... धातुम्माहापथे तथागतस्स थूपो काताब्बो***)।[19] बुद्ध के पूर्वकालिक रचे गए स्तूपों के चाक्षुष उदाहरण प्राप्त नहीं हैं और बुद्ध के धतुगर्भ वाले स्तूप भी अपने मूल रूप में नहीं मिलते। ऊपर के दस स्तूपों में से कुशीनगर एवं वैशाली के आज के प्राप्त स्तूप उन स्थानों की याद दिलाते हैं जहाँ बुद्ध के शरीरावशेष पर स्तूप रचे गए थे।

वैशाली का स्तूप एवं अशोक–स्तम्भ

बुद्ध के शरीरावशेष पर रचे गए नौ स्तूपों में से सात स्तूपों से बुद्ध के शरीरावशेष की भस्म को मौर्य सम्राट् अशोक ने निकलवा कर उन धर्म–रजों पर

सन्नति (कर्नाटक) में अंकित अशोक, दूसरी सदी ई.पू.

८४००० स्तूपों का निर्माण करवाया, ऐसी अनुश्रुति है[20] जिनका विशेष विवरण ह्वेनसांग ने दिया है।[21] नौ स्तूपों में द्रोण नामक ब्राह्मण द्वारा बनवाया गया स्तूप मृद्भाण्ड पर बना था उसमें शरीर–धातु नहीं थी और रामग्राम के स्तूप को नाग रक्षकों के प्रतिरोध के कारण अशोक सफल नहीं हुआ। इतिहास में यह घटना महत्वपूर्ण रही जिस कारण साँची के शिल्पियों ने अपने महास्तूप के दक्षिणी तोरण पर अंकित किया ———

उन धर्मराजिक स्तूपों में से कई परवर्तीकालीन विस्तार के साथ अवशेष रूप में आज भी प्राप्त हैं। वाराणसी व तक्षशिला के धर्मराजिक स्तूप उल्लेख्य हैं।

धर्मराजिक स्तूप सारनाथ वाराणसी

बुद्ध के सुरक्षित शरीरावशेष शाक्यों के कपिलवस्तु वर्तमान पिपरहवा से साभिलेख प्राप्त हुए हैं और ऐसी ही प्राप्ति बड़ोदरा के देवनीमोरी से भी हुई है।

पिपरहवा से प्राप्त साभिलेख बुद्धावाशेष–कलश देवनीमोरी (बड़ोदरा) से प्राप्त बुद्धावाशेष–मंजूषा

अशोक द्वारा अनेक स्थानों पर निर्मित स्तूपों को निर्देशित किया जा सकता है . निगलीवा में कनकमुनि बुद्ध के स्तूप के जीर्णोद्धार का उल्लेख अशोक ने उस स्थान के अपने स्तम्भ लेख में किया है (कोनाकमनस थुबे दुतियं बढिते)[22]। आरम्भिक स्तूपों की रचना सामान्य सी अर्ध गोलक जैसी रही होगी।

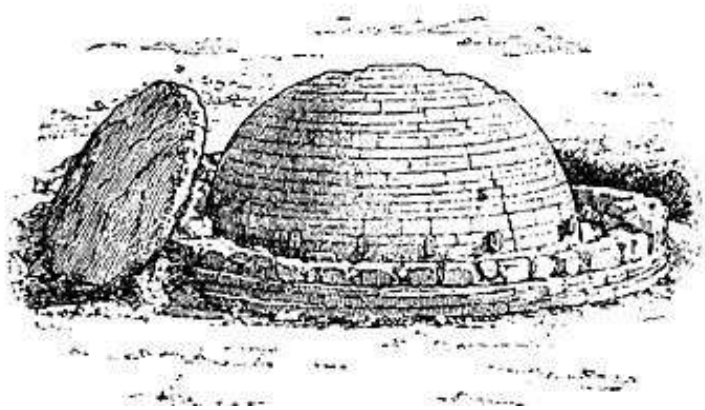

आरम्भिक स्तूप संरचना (कल्पित स्वरूप)

अशोक के समय में अर्ध गोलक के ऊपर वर्गाकार वेदिका का निर्माण किया जाता था जैसा कि वाराणसी के सारनाथ में प्राप्त एकाश्म वेदिका से स्पष्ट होता है जो परवर्ती काल तक प्रचलित रही।

अशोक के समय की सारनाथ में प्राप्त एकाश्म वेदिका

वेदिका के मध्य सदण्ड छत्र रहा होगा जैसा कि साँची में ओपदार छत्र प्राप्त हुआ था। स्तूप का प्रदक्षिणा–पथ सम्भवतः खुला ही रहता होगा क्योंकि उसके होने के अनुमान के लिए आधार नहीं मिलता।

आरम्भिक स्तूपों की रचना के सन्दर्भ में शुंग–सातवाहन काल के स्तूपों पर उकेरे गए सामान्य स्तूप अनुमानार्थ सहायक हो सकते हैं। इन उदाहरणों में खुले प्रदक्षिणा–पथ, बिना छत्र व वेदिका एवं अनलंकृत अण्ड भाग देखे जा सकते हैं। गोलाकार स्तूप के प्रदक्षिणा–पथ को जब बाहरी भाग में वेदिका का घेरा दिया गया उस समय चौकोर और गोल दोनों प्रकार का प्रयोग किया गया जान पड़ता है जो आगे चल कर वर्तुलाकार के रूप में ही मान्य हुआ।

साँची में उकेरित स्तूप की चौकोर वेदिका

भगवान् बुद्ध के शरीरावशेष स्तूप के भीतर होने के कारण स्तूप भगवान् बुद्ध का सशरीर स्वरूप माना गया और जहाँ कहीं बुद्ध की उपस्थिति सूचित करनी होती स्तूप उत्कीर्ण कर दिया जाता था क्योंकि बुद्ध का स्वरूप अंकित करना निषिद्ध था। आगे चल कर जब भगवान् बुद्ध के जीवन की घटनाओं का अंकन किया जाना आवश्यक समझा गया तब स्तूप उनके महापरिनिर्वाण का द्योतक हो गया।

साँची में उकेरित महापरिनिर्वाण स्तूप

अन्य घटनाओं के लिए अन्य प्रतीक चुने गए जो सम्बन्धित घटनाओं को स्पष्ट करते थे, जैसे हाथी उनके जन्म के लिए,

मायादेवी के गर्भ में बुद्ध की संक्रान्ति (भरहुत)

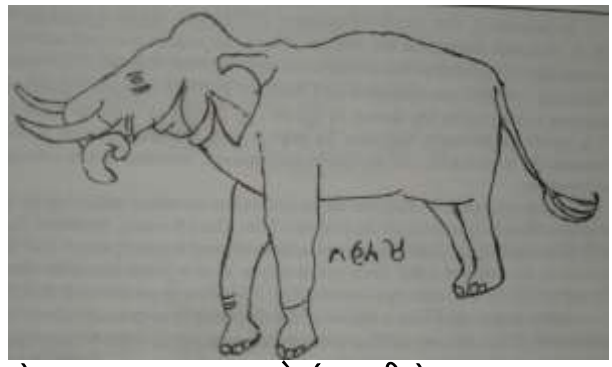

गजतमे (कालसी)

बोधि वृक्ष ज्ञान–प्राप्ति के लिए तथा धर्म–चक्र प्रथम धर्मोपदेश के लिए किन्तु, आरम्भ में सम्भवतः सभी घटनाओं के लिए स्तूप का ही प्रयोग होता रहा हो जिसमें स्तूप में कुछ वैभिन्य के साथ उन घटनाओं को पहचाना जाता रहा हो। ऐसा मानने के लिए परवर्ती काल के हिमालयीय तंत्रयान में प्रचलित बुद्ध के जीवन की आठ घटनाओं के लिए थोड़े भेद–प्रभेद के साथ आठ स्तूपों की कल्पना है जो सम्भवतः पूर्वकालिक परम्परा का अनुगमन है।

भरहुत में बोधि वृक्ष के रूप में बुद्ध की पूजा का अंकन

साँची में अंकित धर्म–चक्र के रूप में बुद्ध की पूजा

हिमालयीय तंत्रयान में प्रचलित बुद्ध के जीवन की आठ घटनाओं के लिए थोड़े भेद–प्रभेद के साथ आठ स्तूपों की रचना।

तिब्बती परम्परा का उदाहरण

आरम्भिक स्तूपों का बहुविध विकास मौर्योत्तर काल में हुआ जिसमें आकार, अलंकरण, भू–निवेश, तोरण तथा अंग–प्रत्यंग में नवीनता आयी जिसके परिणामस्वरूप भरहुत, साँची एवं अमरावती के आकर्षणपूर्ण स्तूपों की रचनाएँ हुईं।

अमरावती स्तूप फलक

संदर्भ–

1.ऋग्वेद, ७.२.११
2.वही, १.२४.७
3.वही, ३.२६.३

4. *शब्दकल्पद्रुम,* भाग १, पृ. ६७
5. वही, १०.१४६.५
6. *अमरकोश,* ३.५.१६
7. *शब्दकल्पद्रुम,* भाग ५, पृ. ४३४
8. *शतपथ ब्राह्मण,* १३.८.१.४
9. तारापाद भट्टाचार्य, *ए स्टडी ऑफ़ वास्तुविद्या,* पटना, १६४८, पृ. २७
10. महापरिनिर्वाण–सूत्र, *दीघनिकाय,* १६.६.३०
11. वही, १६.६.३२
12. वही,१६.६.३३–३६
13. वही, १६.६.४०
14. वही
15. वही
16. वही, १६.६.४१
17. वही, १६.६.४२
18. वही
19. वही, १६.६.४०
20. *दिव्यावदान,* २६, पृ. ३६८
21. राधा कुमुद मुकर्जी, *अशोक,* लन्दन, १६२८, पृ. ८२ टिप्पणी १
22. भाग ५, पृ. ५–६